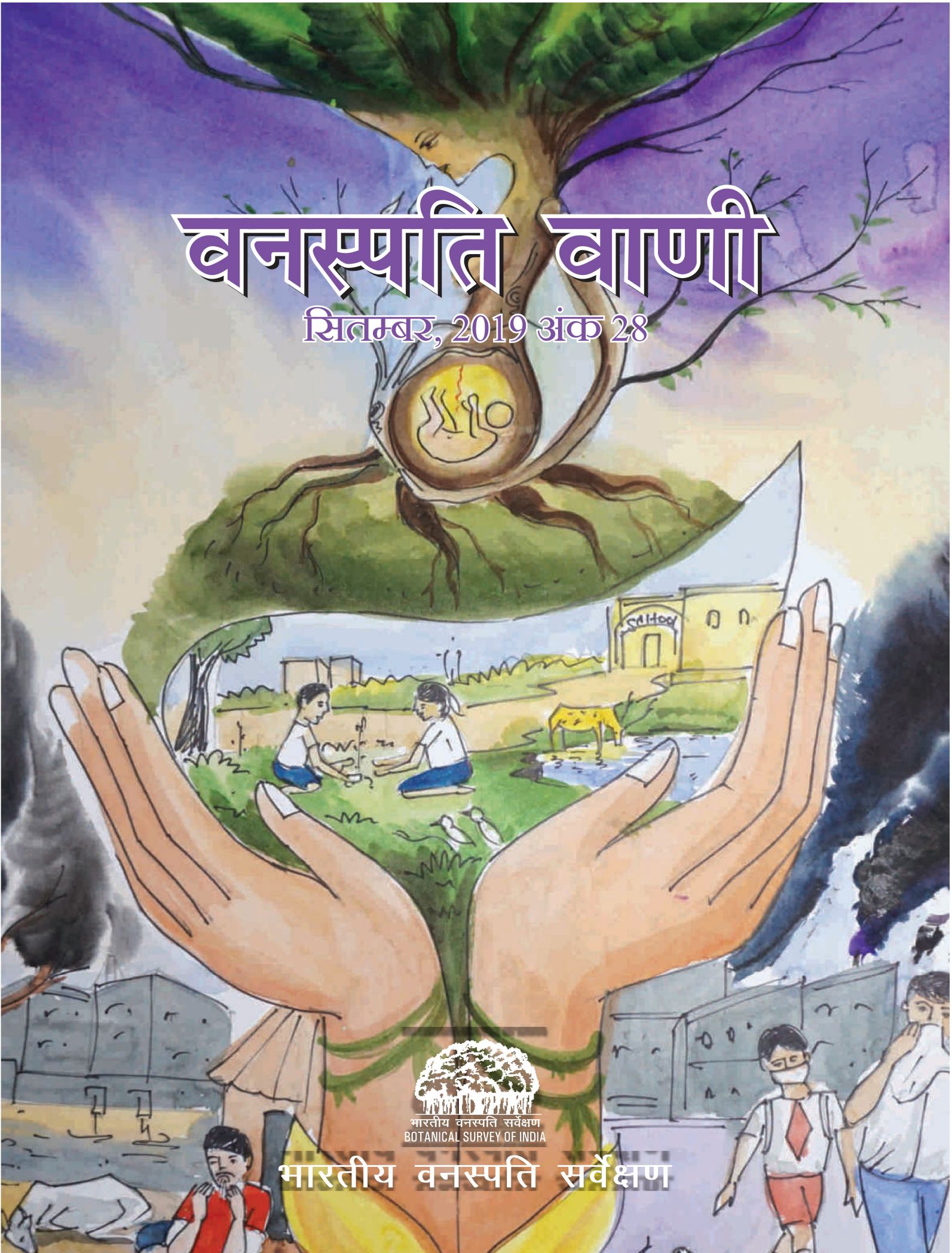

वनस्पति वाणी

सितम्बर, 2019 अंक 28

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण
BOTANICAL SURVEY OF INDIA

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून, 2018 के अवसर पर श्री प्रकाश जावड़ेकर माननीय मंत्री पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के द्वारा प्रकाशित 'वनस्पति अन्वेषण' (प्लान्ट डिस्कवरीज - 2018) का विमोचन करते हुये मंच पर उपस्थित माननीय राज्य मंत्री बाबुल सुप्रियो, श्री सी.के. मिश्रा, सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय एवं अन्य विशिष्ट अतिथिगण।

श्री सी.के. मिश्रा, सचिव एवं श्रीमति मंजू पाण्डेय, संयुक्त सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली, केन्द्रीय राष्ट्रीय पादपालय, हावड़ा में 7 मार्च, 2019 को डॉ. कैलाश चन्द्रा, निदेशक भारतीय प्राणी सर्वेक्षण एवं डॉ. ए.ए. माओ, निदेशक, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के साथ वनस्पति वाणी अंक 27 का विमोचन करते हुए।

संयुक्त राष्ट्रसंघ जैव विविधता दशक

वनस्पति वाणी

सितम्बर 2019 अंक 28

पुष्पिताः फलवन्तश्च तर्पयन्तीह मानवान्।
वृक्षदं पुत्रवत् वृक्षास्तारयन्ति परंत्र च।।

(इह पुष्पिताः फलवन्तः च मानवान् तर्पयन्ति वृक्षाः वृक्षदं पुत्रवत् परत्र च तारयन्ति।)

(भावार्थः फलों और फूलों वाले वृक्ष मनुष्यों को तृप्त करते हैं। वृक्ष देने वाले अर्थात् समाजहित में वृक्षारोपण करने वाले व्यक्ति का परलोक में तारण भी वृक्ष ही करते हैं।)

– (महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय, 58, श्लोक 30)

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण
BOTANICAL SURVEY OF INDIA

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण

©भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, 2019

इस प्रकाशन का कोई भी अंश निदेशक, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण की लिखित पूर्वानुमति के बिना पुनर्प्रवर्तित/ रिट्रिवल पद्धति में भण्डारण या इलैक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल फोटोकापी, रिकार्डिंग या अन्य किसी तरीके से ट्रांसमिट नहीं किया जा सकता है।

संरक्षण एवं प्रधान सम्पादक
ए.ए. माओ

सम्पादक मण्डल
एस. एस. दाश
संजय कुमार
एस. एल. मीणा

सहयोग
संजीव कुमार दास एवं कैलाश कुशवाहा

डिजाइन
अंचल विश्वास एवं संजय कुमार

ISSN : 09758-4342

निदेशक , भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, सी. जी. ओ. कॉम्पलेक्स, तृतीय एम.एस.ओ. भवन,एफ विंग, डी एफ ब्लॉक, सेक्टर -1, साल्ट लेक सिटी कोलकाता -7000 064 द्वारा विभाग की वेबसाइट पर ई-प्रकाशित।

- वनस्पति वाणी में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, प्रमाणिकता एवं व्यक्त विचारों के लिये लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।
- इस अंक के प्रूफ संशोधन, मुद्रण क्रम में राजभाषा हिन्दी एवं प्रकाशन अनुभाग के सभी कर्मचारियों ने सक्रिय सहयोग दिया है।

ग्रीन गुड डीड

भारत के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा संचालित 'ग्रीन गुड डीड' अभियान की कुछ चुनिन्दा बातों को हम वनस्पति वाणी के इस अंक में इस उद्देश्य के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं कि, हम सभी इनसे प्रेरित होकर अपने जीवन में इनको क्रियान्वित करें। ये छोटी छोटी बातें पर्यावरण को बहुत बड़ा लाभ देने में सक्षम हैं।

पक्षियों के लिए दाना-पानी रखें।

अपने घर में सब्जी का बगीचा या किचन गार्डन लगाएं।

अपने पौधों के लिए कम्पोस्ट खाद का प्रयोग करें।

पौधों को उपहार में भेट दें।

सूखी पत्तियों को न जलाएं, उलसे कम्पोस्ट निर्माण करें।

कीटनाशकों का उपयोग न करें।

अपने घर की सजावट के लिए फूलों तथा मिट्टी के दीयों का प्रयोग करें।

पूजा सामग्री को तालाब और नदियों में न डालें।

आवरण चित्र

श्रेया मंडल
बाँट्रा बी.बी.पी.सी. बालिका हाई स्कूल, हावड़ा

पार्श्व चित्र

सैकत राय चौधरी
सल्किया हिन्दू स्कूल
हावड़ा

अनुक्रमणिका

वनस्पति विविधता

1.	हिमाचल प्रदेश के शीत मरूस्थल में पायी जाने वाली मनमोहक वनस्पतियां: संक्षिप्त प्रतिवेदन	रजनीकांत एवं एस.के. सिंह	1
2.	पश्चिमी हिमालय के प्रमुख औषधीय शाक	संतोष नौटियाल, रजनीकांत, कपिल खर्कवाल एवं संजय उनियाल	7
3.	क्योगनोस्ला अल्पाइन अभयारण्य : एक संक्षिप्त विवरण	सुभोजीत लाहिड़ी, सुधांशु शेखर दाश, विपिन कुमार सिन्हा एवं माधव कुमार झा	10
4.	भारत में कुकरबिटेसी कुल की विविधता-एक अवलोकन	मयंक द्विवेदी, संदीप चौहान, शिवानी मिश्रा एवं ए ए अंसारी	13
5.	अंडमान निकोबार द्वीपसमूह की पादप विविधता: संक्षिप्त परिदृश्य	प्रकाश होरो एवं लाल जी सिंह	16
6.	नागफनी (कैक्ट्स) में अति सूक्ष्मजीवियों जनित रोग एवं उपचार	शिव कुमार	19

अपुष्पीय वनस्पति

7.	बिलगिरी रंगास्वामी मंदिर वन्यजीव अभयारण्य, कर्नाटक की कवक सम्पदा	रश्मि दुबे, श्रेया सेनगुप्ता चॅटर्जी एवं अमित दिवाकर पाण्डेय	27
8.	शैवाल से संबंधित कुछ रोचक वैज्ञानिक तथ्य	एस.के. यादव एवं संजय कुमार	30
9.	कप्पाफाइकस अल्वरेजी की खेती - आजीविका के लिए एक वरदान	पलनीसामी एम. एवं एस. के. यादव	33

लोक वनस्पति विज्ञान

10.	भारतीय परम्परा में पादपों का नामकरण (विशेष आमंत्रित लेख)	धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी	34
13.	उत्तराखण्ड के चम्पावत जिले में पर्णोद्भिद का लोक वानस्पतिक महत्व	पुरूषोत्तम कुमार डेरोलिया	39
14.	*आईपोमिया कार्निया*: बेशरम नाम लेकिन अनेक काम	हरीश सिंह	43
15.	बिहार के पश्चिम चम्पारण जिले की जनजातियों द्वारा खाई जाने वाली कुछ जंगली वनस्पतियाँ	हरीश सिंह, मोनिका मिश्रा एवं पंकज ढोले	45
16.	वान वन्यजीव अभयारण्य के जंगली खाद्य पौधे	प्रियंका इंगळे, सुनीता भोंसले, माधुरी पवार एवं पी. लक्ष्मीनरसिम्हन	50

चिर परिचित वनस्पति

17.	कीटभक्षी *यूट्रीकुलेरिया* वंश और उसका कीट जालतंत्र	अनन्त कुमार	60
18.	हिमालय का संकटग्रस्त औषधीय पौधा: सालम पंजा	भावना जोशी एवं गिरिराज सिंह पंवार	61
19.	छोटा सितारा झाड़ी (*राइटिया एण्टीडायसेन्ट्रिका*) - एक परिचय	ओंकार नाथ मौर्य, कुमार अविनाश भारती एवं आशुतोष कुमार वर्मा	64

वानस्पतिक यात्रा

20.	गोचा-ला ट्रेक: सिक्किम, हिमालय की गोद में एक वानस्पतिक स्वर्ग	सुभोजीत लाहिड़ी, सुधांशु शेखर दाश, विपिन कुमार सिन्हा एवं माधव कुमार झा	65

वान वन्यजीव अभयारण्य के जंगली खाद्य पौधे

प्रियंका इंगळे, *सुनीता भोंसले, माधुरी पवार एवं पी. लक्ष्मीनरसिम्हन
भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, पुणे
***वनस्पतिशास्त्र विभाग, बलभीमकला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, बीड**

वान वन्यजीव अभयारण्य, अकोला जिले के अकोट वन्यजीव डिवीजन में स्थित है, जिसमें मेलाघाट टाइगर रिजर्व का 211 वर्ग किमी क्षेत्र शामिल हैं। यह अभयारण्य 21°09'00" से 21°19'00" पूर्वी देशान्तर और 76°44'16" से 76°59'00" उत्तरी अक्षांश के बीच स्थित है। वान वन्यजीव अभयारण्य के 211 वर्ग किमी क्षेत्र में से केवल 205.86 वर्ग किमी का क्षेत्र वास्तविक वन क्षेत्र है और 5.14 वर्ग किमी क्षेत्र खेती और सात पूर्व गांवों का 'गौतन' क्षेत्र है।

अभयारण्य क्षेत्र में मौजूद एकमात्र गांव 'तलई' है। 'राठी' और 'कोरकू' आदिवासी समुदाय वान वन्यजीव अभयारण्य क्षेत्र में रहने वाले प्रमुख आदिवासी समुदाय हैं। हालांकि 'कोरकू' समुदाय की तुलना में 'राठी' समुदाय की संख्या अधिक है। ये दोनों समुदाय मुख्य रूप से अपनी आजीविका अर्जित करने के लिए वान वन्यजीव अभयारण्य पर निर्भर हैं। खाद्योपयोगी और आर्थिक रूप सें महत्वपूर्ण पौधों की जानकारी एवं संख्या इन्हीं समुदायों के लोगों सें और स्थानीय वन श्रमिकों से एकत्रित की गई है।

इस शोध पत्र में हमने वान वन्यजीव अभयारण्य क्षेत्र से 38 कुल और 59 प्रजातियों के जंगली खाद्य पौधों की जानकारी प्रस्तुत की हैं। यह स्थानीय आदिवासी समुदाय और स्थानीय वन श्रमिक इन पौधों का फलों, सब्जियों, आदि के रूप में उपयोग करते हैं, जिनमें से सबसे लोकप्रिय जंगली खाद्य 'महुआ' है।

क्रम	(कुल)	वानस्पतिक नाम	सामान्य नाम	उपयोगी भाग	उपयोग
1.	**अकेन्थेसी**	*ब्लेफॅरीस इन्टेग्रीफोलीया*	कांटा माका	पत्तियां	पत्तियों को सब्जी के रूप में पकाया जाता है।
2.	**अमेरान्थेसी**	*अमेरान्थस स्पायनोसस*	कांटा चौलाई	पत्तियां, युवा पौधे	पत्ते और युवा पौधे सब्जी के रूप में पकाए जाते है। विशेष रूप से सूखे की अवधि के दौरान यह सब्जी खाते है।
3.	**अमेरान्थेसी**	*अमेरान्थस व्हिरीडीस*	जंगली चौलाई	पत्तियां	यह एक सब्जी के रूप में खाया जाता है। सूजन, फोड़े और और रक्तस्राव के इलाज के लिए पत्तियों का उपयोग ताजा या सूखे पाउडर के रूप में किया जाता है।
4.	**अमेरान्थेसी**	*डायजेरा म्युरीकॅटा*	चंचली	पत्तियां, बीज और फूल	पत्तियां और युवा शूट की सब्जी पकायी जाती है। मूत्र संबंधी विकारों के इलाज मे बीज एवं फूलों का उपयोग किया जाता है।
5.	**ऐनाकार्डीएसी**	*बचनानीया कोचीनचायनेंसीस*	चिरोंजी	फल, बीज	फल खांसी और अस्थमा के इलाज में किया जाता है। पके हुए फल का छिलका खाया जाता है। बीजों का उपयोग मिठाई में सूखे मेवों के रूप में किया जाता है।
6.	**ऐनाकार्डीएसी**	*सेमिकार्पस ऑनाकार्डीयम*	भिलावां	फल	फलो के लाल-नारंगी भाग को धुप में सूखाया जाता है और अर्ध-सूखा होने के बाद इसे खाया जाता है। भिलावां के फलों का उपयोग त्वचा रोग, एलर्जी, जोड़ों मे

क्रम	(कुल)	वानस्पतिक नाम	सामान्य नाम	उपयोगी भाग	उपयोग
					सूजन, जहरीले काटने, कुष्ठ रोग, खाँसी, अस्थमा और अपच में होता है। दर्दनाक घावों पर भिलावां तेल प्रभावी रूप से दर्द को नियंत्रित करता है।
7.	**एपोसायनेसी**	*कैरीसा करन्डास*	करोंदा	फल	करोंदा के फलों का स्वाद खट्टा होता है। फलो को ताजा खाया जा सकता है या जेली और जाम के लिए इस्तेमाल किया जाता है। करोंदा फलों का उपयोग सब्जी, चटनी और अचार बनाने में किया जाता है।
8.	**एपोसायनेसी**	*सिरोपिजीया बल्बोसा*	खाडुला	कंद	कंद कच्चे या पकाकर खाए जाते हैं। कंद से काढ़ा बनाते है।
9.	**एपोसायनेसी**	*राइटिया टिन्क्टोरिया*	कपार	पत्तियां	पत्तियों को सब्जी के रूप में पकाया जाता है। पत्तिया त्वचा विकार जैसे सोरायसिस कवक संक्रमण की औषधि में उपयोगी है।
10.	**एरेकेसी**	*फिनिक्स सिल्वेस्टिस*	सेंधी	फल	लाल रंग में पका हुआ फल खाया जाता है। यह खांसी, बुखार, तंत्रिका दुर्बलता और गोनोरिया में भी फल का उपयोग करते है।
11.	**एस्टरेसी**	*सॉन्थिलियम सायनेरियम*	सहदेवी	पत्तियां,बीज	पत्तियों को सब्जी के रूप में पकाया जाता है। बीज नींबू के रस के साथ पेस्ट में बनाये जाते हैं और पेडीक्यूली को नष्ट करने के लिए इस्तेमाल करते हैं।
12.	**वेस्टरेसी**	*ग्लॉसोकॉर्डीया बॉसवेलिया*	पत्थर-सुवा	पत्तियां	एक सब्जी के रूप में पत्थर-सुवा का उपयोग होता हैं। इसका स्वाद कड़वा होता है।
13.	**ऑक्जेलिडेसी**	*ऑक्जेलिस कॉर्निक्युलाटा*	अम्रुल	पत्तियां	पत्तियां सलाद के रूप में खाते हैं या सब्जी के रूप में पकायी जाती हैं।
14.	**बेसेलेसी**	*बैसेला अल्बा*	पोई	पत्तियां	व्यापक रूप से पत्ती का सब्जी के रूप में उपयोग किया जाता है। पत्तियों का सूप बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। पोई की पत्तियों में कैलोरी कम मात्रा में होती है, लेकिन प्रति कैलोरी प्रोटीन की मात्रा उच्च होती है।
15.	**बोरेजिनेसी**	*कार्डीया डायकोटोमा*	लसोड़ा	फल	कच्चे फलों का साग और आचार भी बनाया जाता है। पके हुए फल मीठे होते हैं तथा इसके अन्दर गोंद की तरह चिकना और मीठा रस होता है। फलों की सब्जी भी बनती है।